

पारंपरिक नववर्ष आधारित त्योहार

चर्चा में क्यों?

भारत के उपराष्ट्रपति ने लोगों को 'चैत्र शुक्लादि, गुड़ी पड़वा, उगादि, चेटीचंड, बैसाखी, वसु, पुथंडु और बोहाग बह्वि' त्योहारों पर शुभकामनाएँ दीं।

- वसंत ऋतु के ये त्योहार भारत में पारंपरिक नववर्ष की शुरुआत के प्रतीक हैं।

प्रमुख बद्धि:

चैत्र शुक्लादि:

- यह विक्रम संवत् के नववर्ष की शुरुआत को चिह्नित करता है जिसे वैदिक [हद्वि] कैलेंडर के रूप में भी जाना जाता है।
- विक्रम संवत् उस दिने से संबंधित है जब सम्राट विक्रमादित्य ने शकों को हराया और एक नए युग का आह्वान किया।
- उनकी देखरेख में खगोलविदों ने चंद्र-सौर प्रणाली के आधार पर एक नया कैलेंडर बनाया जिसका अनुसरण भारत के उत्तरी क्षेत्रों में अभी भी किया जाता है।
- यह चैत्र (हद्वि कैलेंडर का पहला महीना) माह के 'वर्द्धति चरण' (जिसमें चंद्रमा का दृश्य पक्ष हर रात बढ़ता जाता है) का पहला दिन होता है।

गुड़ी पड़वा और उगादि:

- ये त्योहार कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र सहित दक्कन क्षेत्र में लोगों द्वारा मनाए जाते हैं।
- दोनों त्योहारों के समारोहों में आम प्रथा है कि उत्सव का भोजन मीठे और कड़वे मशिरण से तैयार किया जाता है।
- दक्षिण में बेवु-बेला नामक गुड़ (मीठा) और नीम (कड़वा) परोसा जाता है, जो यह दर्शाता है कि जीवन सुख और दुख दोनों का मशिरण है।
- गुड़ी महाराष्ट्र के घरों में तैयार की जाने वाली एक गुड़िया है।
 - गुड़ी बनाने के लिये बाँस की छड़ी को हरे या लाल ब्रोकेड से सजाया जाता है। इस गुड़ी को घर में या खड़की/दरवाजे के बाहर सभी को दिखाने के लिये प्रमुखता से रखा जाता है।
- उगादि के लिये घरों में दरवाजे आम के पत्तों से सजाए जाते हैं, जिन्हें कन्नड़ में तोरणालु या तोरण कहा जाता है।

चेटी चंड:

- संधि 'चेटी चंड' को नववर्ष के रूप में मनाते हैं। चैत्र माह को संधि में 'चेत' कहा जाता है।
- यह दिन संधियों के संरक्षक संत उदयलाल/झुलेलाल की जयंती के रूप में मनाया जाता है।

नवरेह:

- यह कश्मीर में मनाया जाने वाला चंद्र नववर्ष है।
 - संस्कृत के शब्द 'नववर्ष' से 'नवरेह' शब्द की व्युत्पत्ति हुई है।
- यह चैत्र नवरात्रि के पहले दिन आयोजित किया जाता है।
- इस दिन कश्मीरी पंडित चावल के एक कटोरे के दर्शन करते हैं, जिसे धन और उर्वरता का प्रतीक माना जाता है।

बैसाखी:

- इसे हद्विओं और सखियों द्वारा मनाया जाने वाला बैसाखी भी कहा जाता है।
- यह हद्वि सौर नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक है।
- यह वर्ष 1699 में गुरु गोविंद सिंह के खालसा पंथ के गठन की याद दिलाता है।
- बैसाखी वह दिन था जब औपनिवेशिक ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकारियों ने एक सभा में जलियाँवाला बाग हत्याकांड को अंजाम दिया था, यह औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारतीय आंदोलन की एक घटना थी।

वशिः

- यह एक हद्वि त्योहार है जो भारत के केरल राज्य, कर्नाटक में तुलु नाडु क्षेत्र, केंद्रशासति प्रदेश पांडिचेरी का माहे ज़िला, तमलिनाडु के पडोसी क्षेत्र और उनके प्रवासी समुदाय में मनाया जाता है ।
- यह त्योहार केरल में सौर कैलेंडर के नौवें महीने, मेदाम के पहले दनि को चहिनति करता है ।
- यह हमेशा ग्रेगोरयिन कैलेंडर में अप्रैल के मध्य में 14 या 15 अप्रैल को हर वर्ष आता है ।

पुथांडः

- इसे पुथुवरुडम या तमलि नववर्ष के रूप में भी जाना जाता है, यह तमलि कैलेंडर वर्ष का पहला दनि है और पारंपरिक रूप से एक त्योहार के रूप में मनाया जाता है ।
- इस त्योहार की तारीख तमलि महीने चथिरिई के पहले दनि के रूप में हद्वि कैलेंडर के सौर चक्र के साथ नरिधारति की जाती है ।
- इसलिये यह ग्रेगोरयिन कैलेंडर में हर वर्ष 14 अप्रैल को आता है ।

बोहाग बह्विः

- बोहाग बह्वि या रोंगाली बह्वि, जसि हतबह्वि (सात बह्वि) भी कहा जाता है, असम के उत्तर-पूर्वी भारत और अन्य भागों में मनाया जाने वाला एक पारंपरिक आदवासी जातीय त्योहार है ।
- यह असमिया नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक है ।
- यह आमतौर पर अप्रैल के दूसरे सप्ताह में आता है, ऐतहासिक रूप से यह फसल के समय को दर्शाता है ।

स्रोत-पीआईबी

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/traditional-new-year-festivals>

